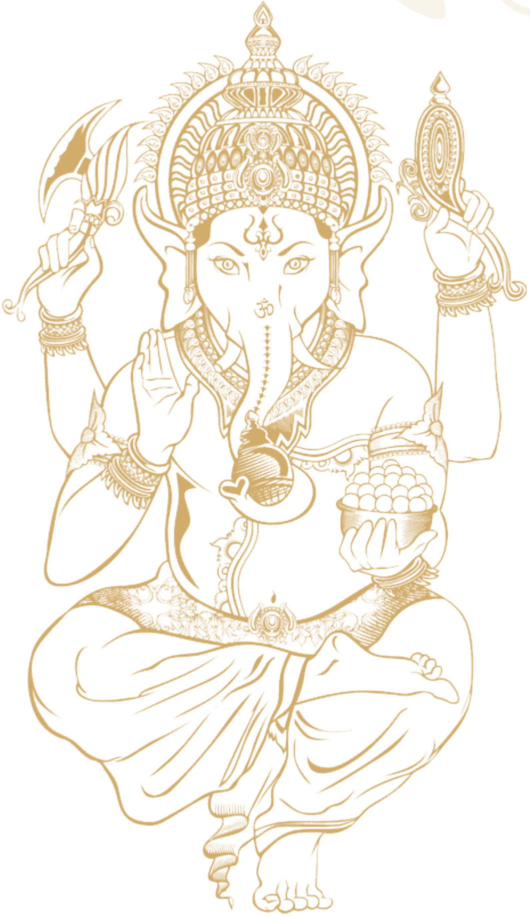

Yashika Shree

18 Jul 2024

05:45 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121742401

तिथि 18/07/2024 **समय** 17:45:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:11:58
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	13:43:44 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:06:17 घं	योनि	मृग
सूर्योदय	05:07:25 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:41:38 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2081	वश्य	कीटक
शक संवत	1946	वर्ग	मृग
मास	आषाढ़	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	यी-यीशा
नक्षत्र	ज्येष्ठा	पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
योग	ब्रह्म	होरा	चंद्र
करण	बालव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
बुध 6वर्ष 10मा 6दि		भद्रिका 2वर्ष 0मा 5दि	
बुध		भद्रिका	
18/07/2024		18/07/2024	
26/05/2031		24/07/2026	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		18/07/2024
	00/00/0000	संकटा	04/03/2025
	00/00/0000	मंगला	24/04/2025
	18/07/2024	पिंगला	03/08/2025
राहु	10/06/2026	धान्या	02/01/2026
गुरु	15/09/2028	भ्रामरी	24/07/2026
शनि	26/05/2031		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			18:42:57	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			02:09:49	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.23	कलत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			24:37:32	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	नीच राशि	1.26	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			04:10:00	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	सम राशि	1.07	ज्ञाति	भ्रातृ	क्षेम
बुध			28:46:01	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.92	आत्मा	ज्ञाति	जन्म
गुरु			17:39:25	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.29	मातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र			14:11:39	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	शत्रु राशि	1.14	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि	व		24:56:27	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	स्वराशि	1.17	अमात्य	आयु	मित्र
राहु	व		15:30:29	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	सम राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		15:30:29	कन्या	हस्त	2	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

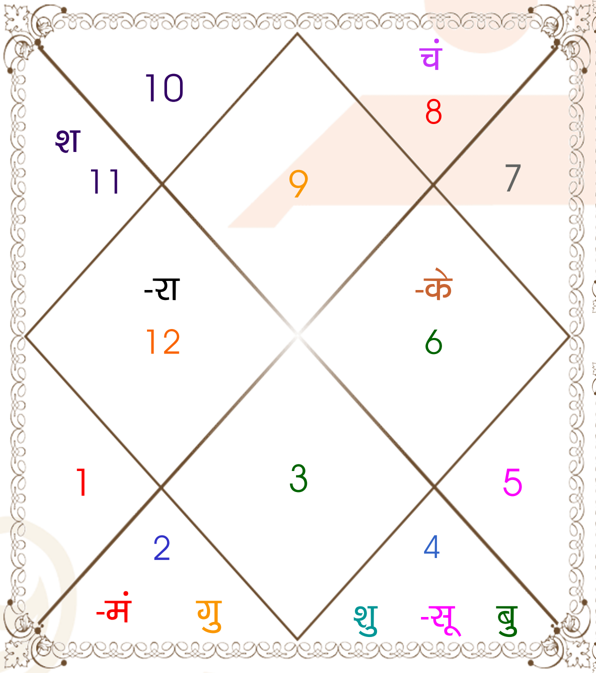

चन्द्र कुंडली

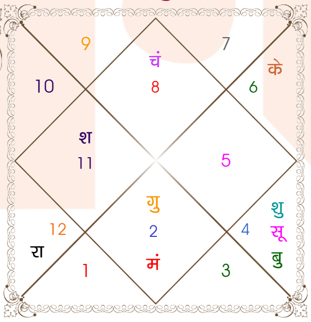

नवमांश कुंडली

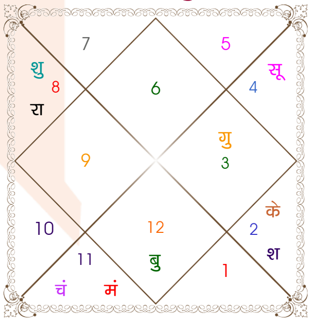

सर्वाष्टकवर्ग

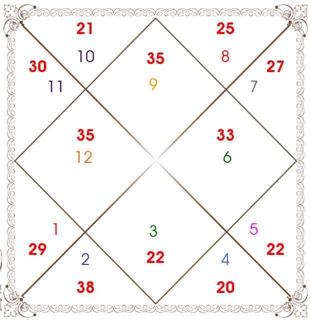

दशमांश कुंडली

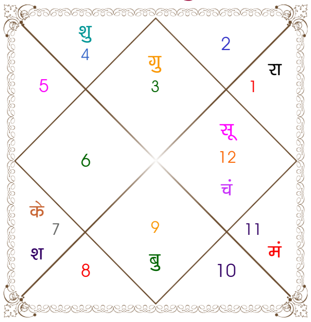

AstroBaba
Lakshmi colony Road no. 2 Kanhauli
Muzaffarpur
9115551572
Astrobaba12951@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण ब्राहमण, गण राक्षस, वर्ग मृग तथा योनि मृग होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर ”यि” या ”यी” से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने से जातक की माता को अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान के द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस मंत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का भी विधि पूर्वक हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि विधान से शान्ति करने पर इसका अरिष्ट प्रभावहीन हो जाता है तथा संबंधित जातक प्रसन्न रहता हैं। जप एवं हवन

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप जीवन में एक ख्याति प्राप्त महिला रहेंगी तथा दूर दूर तक लोग आपका गुणगान करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी तथा इससे आपका सौन्दर्य भी आकर्षक बनेगा। नाना प्रकार के धनैश्वर्य से युक्त होकर आप एक सामर्थ्यवान महिला होंगी तथा अधिकांश कार्यों को स्वयं करने की क्षमता रखेंगी। आप का समाज में प्रचुर मात्रा में प्रभुत्व भी कायम रहेगा तथा सभी लोग आपकी लोकप्रियता तथा प्रतिष्ठा को सदैव स्वीकार करेंगे। साथ ही आप भाषण देने की कला में भी निपुण होंगी एवं अपने भाषणों से लोगों को प्रभावित करेंगी। अतः आप नेतृत्व भी प्राप्त कर सकेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
शेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आप स्वभाव से उग्र रहेंगी तथा क्रोध की प्रबलता आप में विद्यमान रहेगी अतः यदा कदा आपको इसके कारण आर्थिक हानि भी उठानी पड़ेगी। समाज में आपके अन्जनों से मधुर संबंध रहेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा धर्म एवं ईश्वर में आपकी विशेष श्रद्धा रहेगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

समाज में आपके बहुत से मित्र होंगे तथा अपने मित्र मंडली में आप श्रेष्ठ एवं लोकप्रिय समझी जाएंगी। आप अत्यन्त ही सन्तोष युक्त स्वभाव की भी रहेंगी तथा अपनी यथाशक्ति अर्जन किए गये धन आदि में ही पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट रहेंगी। आप अपनी आवश्यकताओं को सामर्थ्य के अर्न्तगत ही रखेंगी। लेकिन धर्माचरण में रत रहते हुए भी आपकी उग्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं आएगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आप लेखन कार्य के प्रति अपनी रूचि रखेंगी तथा काव्य सृजन में सफलता अर्जित कर सकेगी। आप एक सहनशील स्वभाव की महिला होंगी एवं सुख दुःख को समान रूप से समझने एवं अनुभूति करने में सक्षम रहेंगी। आप चतुराई पूर्ण तरीके से अपने समस्त कार्यो को सिद्ध करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। निम्न श्रेणी के लोगों में आप अत्यन्त ही श्रद्धेय एवं पूजनीय समझी जाएंगी तथा वे लोग आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं भक्तिभावना का प्रदर्शन करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यो में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यो पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन

में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी आखें बहुत ही सुन्दर तथा बड़ी बड़ी होगी एवं वक्षस्थल भी विस्तृत रहेगा। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का भी समावेश रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली आदि का चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आपके हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की भी रहेंगी। पिता तथा गुरूजनों से आपके अच्छे संबंध ही रहेंगे। अतः इनसे आपको स्नेह तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहगो। बाल्यावस्था में आप शारीरिक व्याधियों से पीड़ित रहेंगी। अपनी बुद्धिचातुर्य तथा योग्यता के बल पर आप राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त कर सकेगी। आप क्रूर तथा कठोर कार्यो को करने में भी अपनी रूचि प्रदर्शन करेंगी। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों को अपना कार्यक्षेत्र चुनने में प्राथमिकता देंगी। कुटिलता के भाव दृषिटगोचर भी होंगे। इसके अतिरिक्त गुप्त रूप से पापकर्मो को करने की ओर आपकी प्रवृति रहेंगी।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका पेट तथा मस्तक भी विस्तृत आकार का रहेगा। अन्य लोगों की सुन्दर चीजों को देखकर आपमें लोलुपता भाव की प्रवलता दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में कान्ति तथा लावण्यता भी रहेंगी आपके अन्दर धार्मिक भावना भी एवं ईश्वर या धर्म के प्रति भी श्रद्धा रहेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून भी अधिकांश आघात से युक्त रहेंगे। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा चतुराई से उसे सम्पन्न करेंगी। बन्धुजनों से आपको कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा। आपका पराक्रम भी समाज में रहेगा तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके स्वभाव में उग्रता भी रहेगी तथा सरकार से आप आर्थिक हानि को भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप अपने जीवन काल में विपुल धन की स्वामिनी बनेंगी तथा अपने विस्तृत परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का भी पालन करेंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली रहेंगी। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान, आदर तथा लाभ प्राप्त होगा। आपकी नियुक्ति राजकीय सेवा में भी हो सकेगी। आपके मन में हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी विद्यमान रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दृढसंकल्पी

महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप नित्य कोई न कोई कार्य अवश्य करती रहेंगी। साहस से भी आप युक्त रहेंगी। तथा निर्मता पूर्वक अपने कार्यकलापो को सम्न्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप जुआ आदि खेलने को भी उद्यत होंगी परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। स्वभाव में उग्रता के कारण अन्य लोगों से आपका विवाद भी नित्य चलता रहेगा। कभी कभी आप अपने को हृदय से अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगी। आप अपने जीवन काल में शान्ति की अनुभूति अल्प मात्रा में ही करेंगी अन्यथा अशान्त ही रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यकाल से ही घर से बाहर प्रवास करेंगी तथा भ्रमण में भी आप काफी रूचिशील रहेंगी। आप स्वभाव से अभिमानी भी होंगी तथा समय समय पर इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में कठोर भाव रहेगा परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहसपूर्वक धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप समय समय पर निपुणता का भी प्रदर्शन करेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाली होंगी। आपका हृदय कठोर रहेगा तथा करूणा के भाव का उसमें न्यूनता परिलक्षित होगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप में उग्रता की भी प्रबलता रहेगी तथा शीघ्र ही आप अकारण ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित हो जाया करेंगी। स्वास्थ्य की उत्तमता के कारण आपमें शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा परन्तु अन्य लोगों से आपका विवाद होता रहेगा जिससे अधिकांश लोग आपके प्रति विरोध का भाव रखेंगे।

जीवन में कभी कभी आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से जीवन में पीड़ित हो सकती हैं। आपकी देहाकृति भी सुदर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में आप कटु शब्दों का यदा कदा प्रयोग करेंगी जिससे आप से अन्य लोग अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपर्वक आप अपने सम्भाषण में मधुर

शब्दो का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेगी तथा अपने कार्यों को स्वयं ही करने की इच्छुक रहेंगी। आप हिंसावृति से दूर शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगी। आपकी आजीविका भी उत्तम साधनों के द्वारा सुसम्पन्न होगी। सत्य के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा आजीवन इसके पालन के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। अपने बन्धुवर्ग तथा संबंधियों के मध्य आप प्रिय रहेंगी तथा सभी लोग आपको पूर्ण स्नेह प्रदान करेंगे। आप एक धर्म निष्ठ महिला भी होंगी तथा ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण आस्था रखेंगी। साथ ही वीरता का अभाव भी आप में नहीं रहेगा एवं विवादादि में अधिकांश रूप से सफलता ही प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी

अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यों को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथमप्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार , प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं या अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र आदि अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोम तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए एवं सोना, मूंगा, तांबा, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, गेहूं, मल्का इत्यादि पदार्थों का दान भी श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।